PRATIBHA SANSKRITIK SANSTHAN- DELHI

in association with

NISARG- LUCKNOW

PRESENT'S

it's latest play

(Based on World Heritage martial dance)

Bharat Ratna Bhargava's

Translation of

Mahakavi BHASA'S

ABHISHEK NAATAKAM

अभिषेक नाटकम्

Design & Direction

BHUMIKESHWAR SINGH

10th March 2025

06:55 P.M.

VALMIKI RANGSHALA

U.P. SANGEET NATAK AKADAMI

GOMTI NAGAR - Lucknow

creative support : NISARG

C- 136/14 SHIVANI VIHAR, KALYANPUR- LUCKNOW 226022

mob. 9839020107, email: nisargtheatregroup@gmail.com

अभिषेक नाटकम् : पुरोवाक्

महाकवि भास भारतीय शास्त्रीय नाट्य परम्परा के ऐसे नाटककार हैं जिनके नाटकों की विषयवस्तु में सार्वकालिक–सार्वभौमिक स्तर पर सामाजिक, नैतिक और मानवीय मूल्यों की स्थापना होती है। अतः उनका प्रस्तुतीकरण सदैव समसामयिक होता है। यूनेस्को द्वारा विश्व–धरोहर घोषित 'छःऊ' नृत्य के गुरु श्री भूमिकेश्वर सिंह पिछले ढाई दशक से महाकवि भास के नाटकों का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्देशन–मंचन करते आ रहे हैं। भूमिकेश्वर जी नाट्यशास्त्रीय अभिनय पद्धति और छःऊ शैली के रचनात्मक समन्वय के लिए विख्यात हैं। इसमें अभिनेता के दो भौतिक उपकरणों (शरीर और वाणी) का उत्कृष्ट स्तर पर अभिनयपरक विकास होता है। इसीलिए बड़े–बड़े नाट्य एवं फ़िल्म प्रशिक्षण संस्थानों में छःऊ का प्रशिक्षण दिया जाता है। अभिनेता के शरीर में अनिवार्य स्फूर्ति, ऊर्जा, लचीलापन और सन्तुलन विकसित करने के लिए छःऊ प्रशिक्षण का अद्वितीय महत्व है। इसके साथ–साथ अभिनय के सात्विक आयाम के आदर्श विकास के लिए भी छःऊ और भारतीय शास्त्रीय अभिनय पद्धति का समन्वय अत्यन्त उपयोगी होता है।

सात्विक अभिनय का एक अर्थ है– अभिनय करते समय अभिनेता की अपने पात्र के साथ निर्विकार निर्लिप्तता। जिस प्रकार किसी पात्र में रखा हुआ जल पात्र जैसा स्वरूप धारण कर लेता है लेकिन पात्र से पृथक रहता है, उसके साथ घुल–मिल नहीं जाता। उसी प्रकार किसी पात्र का अभिनय करते हुए अभिनेता को बिल्कुल पात्र जैसा स्वरूप धारण कर लेना चाहिए लेकिन अपने मन को पात्र के मन से पूर्णतया पृथक रखना चाहिए। छःऊ और नाट्यशास्त्रीय आंगिक–वाचिक अभिनय अभिनेता के भीतर यह उच्च कोटि का गुण विकसित करता है।

सात्विक अभिनय का एक और आयाम है– भावों की अभिव्यक्ति के द्वारा दर्शक के भीतर रस की निष्पत्ति। भावों की यह अभिव्यक्ति अभिनेता के दो भौतिक उपकरणों के माध्यम से होती है– वाणी और शरीर। मन के भाव शब्द–ध्वनि की मन्दता–प्रबलता व सुर के उतार चढ़ाव से उत्पन्न तरंगों के माध्यम से तथा शरीर के सचल विन्यासों, सचल आकृतियों और गतियों के माध्यम से दर्शक के कानों और नेत्रों से होते हुए मन और मस्तिष्क तक पहुँचकर दर्शक की सम्वेदनात्मक प्रतिक्रिया के द्वारा आनन्दधर्मी रस–निष्पत्ति का कार्य सम्पन्न करते हैं। छःऊ और नाट्यशास्त्रीय आंगिक व वाचिक अभिनय का समन्वय अभिनय के "सात्विक" आयाम को "लार्जर दैन लाइफ़" बनाने में अद्वितीय भूमिका निभाता है।

नाट्य प्रशिक्षण और नाट्यप्रदर्शन के सन्दर्भ में निसर्ग और श्री भूमिकेश्वर सिंह, निदेशक : प्रतिभा सांस्कृतिक संस्थान दिल्ली के सृजनात्मक और मूल्यधर्मी सरोकारों में बड़ी समानता है। इसीलिए निसर्ग संस्था डेढ़ दशक से समय–समय पर गुरु भूमिकेश्वर सिंह जी के निर्देशन में नाट्य प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन तथा उनके द्वारा निर्देशित नाटकों का मंचन करती आ रही है। इसके साथ–साथ निसर्ग और प्रतिभा सांस्कृतिक संस्थान दिल्ली ने लखनऊ में कई नाट्य समारोहों का आयोजन भी किया है। इसी अनुक्रम में 20 दिवसीय छःऊ प्रशिक्षण कार्यशाला के अन्तर्गत् "अभिषेक नाटकम्" प्रस्तुत है। हम इस नाटक के अवलोकनार्थ पधारे सभी सुधी दर्शकों का हार्दिक स्वागत करते हुए आभार व्यक्त करते हैं।

ललित सिंह पोखरिया
अध्यक्ष – निसर्ग

प्रतिभा सांस्कृतिक संस्थान, दिल्ली

प्रतिभा सांस्कृतिक संस्थान की स्थापना सन् 1987 में हुई, जिसके संस्थापक/अध्यक्ष और निर्देशक श्री भूमिकेश्वर सिंह हैं। यह एक विशुद्ध रूप से अव्यावसायिक कला संस्थान है जो प्रदर्शनकारी कलाओं की विभिन्न विधाओं में कार्यरत है। संस्थान छऊ नृत्य, ओडिसी नृत्य और शास्त्रीय नाटक में कार्यक्रमों का संचालन करती है। यह संस्था भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद और फेस्टिवल ऑफ इंडिया, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार में भी इम्पेनल्ड है और संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार से रंगमंच अनुदान प्राप्त करती है।

संस्था का प्रमुख उद्देश्य भरतमुनि द्वारा प्रणीत नाट्यशास्त्र के शास्त्रीय विधान के अनुसार छःऊ शैली में संस्कृत नाटकों का मंचन करना है। यह उत्तर भारत की एकमात्र संस्था है जो 1998 से निरन्तर पारम्परिक शास्त्रीय नाट्य पद्धति को लेकर संग्रह, अभ्यास, प्रशिक्षण व प्रदर्शन करती आ रही है। संस्कृत नाटक और छःऊ यूनेस्को की सूची में एक अमूर्त कला धरोहर के रूप में संलग्न हैं। संस्था द्वारा प्रस्तुत कुछ उल्लेखनीय संस्कृत नाटक इस प्रकार हैं: महाकवि भास रचित दूतवाक्यम, कर्णभारम, पंचरात्रम, दूतघटोत्कचम, मध्यमव्यायोग, उरुभंगम, चारुदत्तम, प्रतिज्ञा–यौगंधरायण, अविमारक, प्रतिमा नाटकम,

महाकवि कालिदास कृत मेघदूतम, विक्रमोर्वशीयम, भट्ट नारायण द्वारा विरचित वेणीसंहारम, महाकवि भवभूति विरचित महावीर चरितम, बोधायन कृत भगवज्जुकम, राजा महेंद्र विक्रम वर्मा विरचित मत्–विलास और गिरीश कर्नाड कृत नागमंडल, हयवदन, कु.वे. पुष्पा कृत अंगूठे के बदले तथा रामधारी सिंह दिनकर कृत कुरुक्षेत्र आदि।

संस्था ने अपने अनेक संस्कृत नाटकों का प्रदर्शन राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समारोहों में किया है। जैसे– उज्जैन, त्रिचूर, त्रिवेन्द्रम, मदुरै, विजयवाड़ा, वाराणसी, पटना, जयपुर, जोधपुर, इन्दौर, कोलकाता, आगरा, छिन्दवाड़ा, जबलपुर, कोट्टायम, उदयपुर, औरंगाबाद, दिल्ली तथा जर्मनी और इटली में।

संस्थान कई वर्षों से भारतीय नाट्य परम्परा के अन्तर्गत नृत्य, संगीत व नाट्य विधाओं में कार्य कर रहे कलाकारों को प्रोत्साहन हेतु सम्मान प्रदान करता आ रहा है तथा अपने उद्देश्यों के तहत समय–समय पर देश भर में भरतमुनि द्वारा प्रणीत नाट्य शास्त्र के विधान के अनुसार प्रशिक्षण कार्यशालाओं, संगोष्ठी एवं भासभूमि रंग उत्सव नाम से नाट्योत्सव का आयोजन भी करती है।

निसर्ग : संक्षिप्त परिचय

- रंगमंच एवं इतर सृजन माध्यमों से व्यक्ति और समाज के मानवीय विकास में विगत 22 वर्षों से सतत् सक्रिय नाट्य संस्था।
- बालकों और युवाओं को नाट्य कला का ज्ञान देने और नैतिकतापरक व्यक्तित्व विकास हेतु नाट्य प्रशिक्षण कार्यक्रम।
- शास्त्रीय (संस्कृत) नाट्य परम्परा के संरक्षण एवं प्रचार–प्रसार द्वारा भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतु नाट्य कार्यशालाओं, नाट्य–मंचन एवं गोष्ठियों का आयोजन।
- लोकनाट्य परम्परा के प्रचार–प्रसार द्वारा भारतीय दर्शन, संस्कृति एवं जीवन मूल्यों के संरक्षण हेतु नाट्य कार्यशालाओं, नाट्य–मंचनों, गोष्ठियों एवं कलाकार सम्मान कार्यक्रमों का आयोजन।
- श्रेष्ठ साहित्य के द्वारा व्यक्ति और समाज के गुणात्मक विकास हेतु विख्यात साहित्यकारों की रचनाओं का मंचन।
- संवेदनशीलता, सकारात्मकता और नैतिकता के संरक्षण हेतु रंगमंच के महत्वपूर्ण नाटकों का मंचन।
- बालकों का व्यक्तित्व विकास करने एवं उन्हें सुसंस्कारों की प्रेरणा देने हेतु नाट्य प्रशिक्षण एवं नाट्यमंचन।
- सामाजिक, आर्थिक रूप से दुर्बल वर्ग के वयस्कों, ग्रामीण, अपवंचित एवं अनाथ बालकों के कल्याण हेतु लघु–दीर्घ नाट्य कार्यशालाएँ एवं नाट्यमंचन।
- सन् 2001 से वर्तमान तक सामान्य वर्ग के लिए अभिनय एवं व्यक्तित्व विकास हेतु 25 बाल नाट्य कार्यशालाओं सहित 50 से अधिक नाट्य कार्यशालाओं का आयोजन।
- वयस्क वर्ग के 65 और बाल वर्ग के 25 नाटकों का मंचन।
- पाँच नाट्य समारोहों का आयोजन।
- उत्तर प्रदेश और उत्तर प्रदेश के बाहर कुल 250 नुक्कड़ नाटकों का मंचन।
- साहित्य, लोक, पर्यावरण, चित्रकला एवं अन्य विषयक गोष्ठी, प्रदर्शनी।
- लखनऊ में बॉन्ड स्ट्रीट थिएटर न्यूयॉर्क, एक्ज़ाइल थिएटर काबुल और पूर्वाभ्यास थिएटर नई दिल्ली के कलाकारों को आमन्त्रित कर मलिन बस्ती के बच्चों के कल्याणार्थ नाट्यमंचन और नाट्यकार्यशालाओं का आयोजन।
- निसर्ग के रंगकर्म की स्तरीयता तथा सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक और मानवीय सरोकारों से प्रभावित होकर अनेक राष्ट्रीय–प्रादेशिक, शासकीय–अशासकीय संस्थाओं द्वारा सहयोग।

नाट्य निर्देशक : भूमिकेश्वर सिंह

भूमिकेश्वर सिंह प्रतिभा सांस्कृतिक संस्थान, दिल्ली के संस्थापक/अध्यक्ष/निर्देशक हैं। इन्होंने श्रीराम सेन्टर, नई दिल्ली से अभिनय में डिप्लोमा, इंडियन माइम थिएटर, कोलकाता से मूकाभिनय में, राजकीय छःऊ नृत्य कला केन्द्र, सरायकेला व त्रिवेणी कला संगम, नई दिल्ली से छःऊ नृत्य में प्रशिक्षण लिया है। आपने भारतीय शास्त्रीय नाट्य परम्परा के विश्वविख्यात गुरु पद्मभूषण के. एन. पण्णिकर से शास्त्रीय नाट्य परम्परा की गहन शिक्षा प्राप्त की है

श्री भूमिकेश्वर कुशल शास्त्रीय नाट्य निर्देशक भी हैं। देश–विदेश के अनेक शहरों में छःऊ नृत्य व नाटकों की सफल प्रस्तुतियाँ दी हैं। आपको साहित्य कला परिषद् एवं त्रिवेणी

कला संगम, नई दिल्ली से छःऊ नृत्य में छात्रवृत्ति एवं मानव संसाधन विकास मंत्रालय, संस्कृति विभाग, भारत सरकार से फैलोशिप प्राप्त है। इन्होंने एकटेरिनबर्ग, रूस में छःऊ नृत्य कार्यशाला एवं नृत्य नाटिका मेघदूत का निर्देशन, आनन्द योगा सेन्टर, ट्यूमेन, रूस और पपेट थिएटर एकटेरिनबर्ग, रूस (2009) एवं यूक्रेन की राजधानी कीव (2013) में छःऊ नृत्य की एकल प्रस्तुति दी है तथा इटली में टैक्ट इंटरनेशनल थिएटर फेस्टिवल, त्रिएस्ते, (2017–18) एवं रोम में एक्स एक्टर थिएटर फेस्टिवल (2019) और फ्रैंकफ़र्ट थिएटर फेस्टिवल (2018–19) फ्रैंकफ़र्ट, ओडर– जर्मनी में छःऊ नृत्य एवं शास्त्रीय नाट्य की सफल प्रस्तुति दी हैं। 2020, 21, 22, 23 और 24 में ऑनलाइन भी प्रस्तुतियाँ भी दी हैं।

अभिषेक नाटकम् : निर्देशकीय

अभिषेक नाटकम् में महाकविभास ने राम कथा के बाली–सुग्रीव प्रसंग का आधार लेकर पारिवारिक – सामाजिक स्तर पर मनुष्य की चारित्रिक दुर्बलता के प्रति विरोध प्रकट किया है। बाली का हृदय परिवर्तन दर्शाकर मनुष्य को नैतिकता के मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी है। इसके साथ–साथ राम द्वारा रावण–वध के पश्चात् अपने राज्याभिषेक से पूर्व सुग्रीव और विभीषण का राज्याभिषेक कराकर आदर्श मानवीय मूल्यों की स्थापना की है। विषयवस्तु की दृष्टि से यह नाटक वर्तमान समय में भी पूर्ण रूप से उपयुक्त है।

मूल रूप से अभिषेक नाटक आकार और घटनाक्रम की दृष्टि से बड़ा नाटक है। यहाँ इसे विषयवस्तु को पूर्णरूप से स्थापित करते हुए कुछ संक्षिप्त रूप में किया जा रहा है।

पात्र–परिचय

मंच पर

अभिजीत सिंह	– सूत्रधार, विद्याधर, वशिष्ठ
संजीत कुमार यादव	– राम
सर्वेश कुमार	– लक्ष्मण, राक्षसी, विद्याधर
नमन मिश्रा	– सुग्रीव, राक्षसी
उत्कर्ष मणि त्रिपाठी	– बाली, वानर सैनिक, वरुणदेव
अभिषेक पाल	– हनुमान, राक्षसी
बुद्धप्रिय गौतम	– अंगद,वानर सैनिक, राक्षसी, समुद्र, शुक, विद्याधर
अमितेश वैभव चौधरी	– वानर सैनिक राक्षसी, समुद्र, सारण
जयप्रकाश ताजपुरिया	– शंकुकर्ण, राक्षसी
राजवीर कान्त	– नील
कौशिकी कान्त	– सीता
अंकित श्रीवास्तव	– रावण
शशांक मिश्रा	– विभीषण
सामूहिक अभिनय	– सभी कलाकार

पार्श्व मंच

मंच सज्जा	– ज़ामिया शकील, शिवरतन
मंच निर्माण पर्यवेक्षक	– अंकित श्रीवास्तव, जयप्रकाश
मंच सामग्री	– संजीत यादव, सर्वेश कुमार
वेशभूषा प्रभारी	– निशु सिंह
वेशभूषा सहायक	– अचिन्त्य शुक्ला, शशांक मिश्रा, कौशिकी कान्त
प्रकाश परिकल्पना व संचालन	– जयप्रकाश तिवारी
प्रकाश उपकरण संयोजन	– नमन मिश्रा, अभिषेक पाल, उत्कर्ष मणि, अमितेश वैभव
मुख सज्जा	– सचिन–शहीर
संगीत संयोजन व मुख्य गायन	– जगतपति पाण्डेय
संयोजन सहायक	– बुद्धप्रिय गौतम
गायक समूह	– सभी कलाकार
वादन (हारमोनियम)	– जगतपति पाण्डेय
नक्कारा, ढोलक, झाँझ	– भूमिकेश्वर सिंह
ढोलक	– अतुल कुमार
बाह्य व्यवस्था	– अनुराग शुक्ला "शिवा"
ग्राफ़िक डिज़ाइन व व्यवस्था सहायक	– चन्दन सिंह पोखरिया
प्रस्तुति दल	– काव्या मिश्रा, तरुण यादव, अभिषेक सिंह

प्रस्तुति–परिकल्पना एवं निर्देशन
भूमिकेश्वर सिंह

विशेष आभार

श्री शिरीष तिवारी, श्री गिरीश बहुगुणा
श्री अमित दुबे, श्री भारतेन्दु कश्यप,
कल्चरल कैफ़े–मॉकिंग बर्ड,
समस्त कर्मचारी : वाल्मीकि रंगशाला, उ. प्र. संगीत नाटक अकादमी।